



“बैराग”

- है कोई राम पिआरो गावै । सरब कलिआण सूख-सच पावै ।
। बन-बन खोजत फिरत बैरागी । बिरले काहू एक लिव लागी ।
। जिन हरि पाइआ से बडभागी । (5-203)
- तिचर वसह सुहे लड़ी - जिचर साथी नाल । जा साथी उठी
चलिआ - ता धन खाकू राल । मन बैराग भइआ - दरखन
देखणै का चाउ । धन स तेरा थान । जिचर वसिआ कंत घर
- जीउ-जीउ सभ कहात । जा उठी चलसी कंतड़ा - ता कोइ

न पुछै तेरी बात । पेईअडै सहु सेव तूं - साहुरड़े सुख वस ।
गुर मिल चज अचार सिख - तुध कदे न लगे दुख । सभना
साहुरै वंजणा - सभ मुकलावणहार । नानक धनं सौहागणी -
जिन सह नाल पिआर । (5-50)

• नानक नाम निधान है - गुरमुख पाइआ जाइ । मनमुख घर
होदी वथ न जाणनी - अंधे-भउक-मुण विललाइ । कंचन
काइआ निरमली - जो सच नाम सच लागी । निरमलं जोत
निरंजन पाइआ - गुरमुख भ्रम भउ भागी । नानक गुरमुख सदा
सुख पावह - अनदिन हर बैरागी । से गुरसिख धन-धन है -
जिनी गुर उपदेस सुणिआ हर कंनी । गुर सतिगुर नाम
द्रिडाइआ - तिन हंउमै दुविधा भंनी । बिन हर नावै को मित्र
नाही - वीचार डिठा हर जंनी । जिना गुरसिखा कउ हर संतुसट
है - तिनी सतिगुर की गल मंनी । जो गुरमुख नाम धिआइदे
- तिनी चड़ी चवगण वंनी । (3-590)

• साचै सबद सहज धुन उपजै - मन साचै लिव लाई । अगम
अगोचर नाम निरंजन - गुरमुख मन वसाई । एकस मह सभ
जगतो वरतै - विरला एक पछाणै । सबद मरै ता सभ किछ
सूझै - अनदिन एको जाणै । जिस नो नदर करे सोई जन बूझै
- होर कहणा कथन न जाई । नानक नाम रते सदा बैरागी -
एक सबद लिव लाई । (3-1234)

(पाठी माँ साहिबा)